ए-आई. संख्या यूपी बिल/2010/35590

डाक पंजी न., मथुरा 61/2011-2013

स्वास्थ्य शिक्षा कैंसर रक्षा

मासिक समाचार पत्र(पंजीकृत)

संरक्षक– प.पू. ... स्वामी ... जी महाराज — खण्ड 2/ अंक : 010/ जनवरी 2012/ स्थानः मथुरा / मूल्यः 5 रुपये

पादकीय :- तम्बाकू मानव स्वास्थ्य का सबसे बड़ा दुश्मन है, फिर भी बाकू का प्रयोग दिन प्रति दिन बढ़ रहा है। यही कारण है कि विश्व में तंबाकू का योग मृत्यु का मुख्य कारण बनता जा रहा है। जिसे रोका जा सकता है। तंबाकू ने व सिगरेट पीने वालों की बढ़ती संख्या स्वास्थ्य समस्या का प्रमुख कारण है। व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार तंबाकू के कारण प्रतिवर्ष लगभग 49 लाख गों की मृत्यु हो रही है तथा वर्ष 2020 तक गंभीर बीमारियों व मृत्यु का सबसे ख कारण तंबाकू होगा। 20 वीं सदी में तंबाकू उपयोग से मरने वालों की ख्या लगभग 10 करोड़ रही है। यदि इसी गति से तंबाकू का उपयोग बढ़ता रहा यह संख्या लगभग 100 करोड़ तक पहुंच जायेगी। अर्थात् 21 वीं सदी में भग भारत की जनसंख्या के बराबर लोगों को सिर्फ तंबाकू की वजह से मय दुनिया छोड़नी पड़ेगी।

1. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे 1998-99 (NFHS-2) के अनुसार 46.5 शत पुरूष एवं 13.8 प्रतिशत महिलायें तंबाकू का उपयोग करते है। NFHS-(2006.07) के अनुसार भारत में तंबाकू की खपत तेजी से बढ़ती जा रही है, प्रतिशत पुरूष एवं 10.9 प्रतिशत महिलायें विभिन्न रूप में तंबाकू का योग कर रहे हैं।

एक नजर-

⇒ प्रत्येक 10 में से 1 छात्र वर्तमान में किसी न किसी रूप में तंबाकू का उपयोग करता है।

⇒ प्रत्येक 4 में से 1 छात्र के घर में कोई व्यक्ति धूम्रपान करता है।

⇒ प्रत्येक 10 में से 4 छात्रों सार्वजनिक स्थलों पर बीड़ी या सिगरेट के धुंये के सम्पर्क में आते हैं।

⇒ प्रत्येक 10 में से 7 धूम्रपान करने वाले धूम्रपान बंद करना चाहते है।

⇒ प्रत्येक 10 में से 7 छात्र सोचते हैं कि सार्वजनिक स्थालों पर धूम्रपान प्रतिबंधित होना चाहिये।

⇒ प्रत्येक 10 में से 5 छात्रों को तंबाकू उपयोग के दुष्प्रभावों के विषय में पढ़ाया जा चुका था।

स्रोतः– ग्लोबल यूथ टोबेको सर्वे (GYTS) 2006 के अनुसार

द्यार्थी एवं राष्ट्रीय तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम

बल यूथ टोबेको सर्वे (GYTS) 2006 अनुसार 13-15 वर्ष की आयु में बच्चे कू उत्पादों का उपयोग शुरू करते है। के अनुसार 14.1 प्रतिशत छात्र तंबाकू उपयोग करते हैं जिनमें 4.2 प्रतिशत पान करते है तथा 11.9 प्रतिशत तंबाकू न्य उत्पादों का सेवन करते है।

त में तंबाकू नियंत्रण रिपोर्ट 2004 के सार तंबाकू उपयोग से प्रतिवर्ष 8 लाख अधिक लोगों की मृत्यु हो रही है जो 12 में लगभग 10 लाख होंगी। यन से पता चलता है कि भारत में रियों की रोकथाम व उपचार पर होने कुल खर्च का लगभग 40 प्रतिशत कू से होने वाली बीमारियों के उपचार पर हो जाता है। कैंसर से मरने वाले लोगों गभग 50 प्रतिशत तंबाकू का उपयोग हैं। हृदय रोग (कार्डियो वेस्कुलर डिसीज) एवं फेफड़े की बीमारियों (लंग डिसीज) का सीधा संबन्ध तंबाकू से है।

भारत सरकार के राष्ट्रीय तंबाकू नियंत्रण कार्यक्रम के अंतर्गत उत्तर प्रदेश के चयनित जिलों में(जिला मथुरा भी शामिल है) जिला तंबाकू नियंत्रण कार्यक्रम के माध्यम से समाज को तंबाकू के उपयोग से होने वाले दुष्प्रभावों के प्रति जागरुक किया जाना है। आगामी वर्षों में इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रदेश के सभी जिलों को शामिल किया जायेगा। जिला तंबाकू नियंत्रण कार्यक्रम के मुख्य घटक निम्न है–

1. तंबाकू नियंत्रण कानून के अनुपालन की निगरानी।

2. सूचना, शिक्षा एवं संचार गतिविधियॉ

3. स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम

4. प्रशिक्षण कार्यक्रम

5. तंबाकू नशा मुक्ति केंद्र

तंबाकू नियंत्रण कानून के अनुपालन की निगरानी तथा सूचना, शिक्षा एवं संचार गतिविधियॉं महत्वपूर्ण है पर इन दोनों से भी ज्यादा महत्व पूर्ण स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम है। क्यों कि इसके द्वारा उपरोक्त दोनों घटकों का क्रियान्वयन भी अप्रत्यक्ष रुप से हो जाता है।

स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रमः स्कूल स्वास्थ्य के अंतर्गत स्कूली छात्रों को तंबाकू के दुष्प्रभावों के प्रति जागरुक किया जा रहा है। जिससे ये छात्र स्वयं तंबाकू उपयोग से दूर रहगें, साथ

ही अपने परिवार एवं समुदाय में तम्बाकू उपयोग को किसी भी रूप में रोकने के लिये दूत के रूप में अपनी भूमिका अदा कर सकेंगें।

तंबाकू नियंत्रण कानून का अनुपालन जिसमें सभी विद्यालयों को ''धूम्रपान व तंबाकू मुक्त'' बनाना, विद्यालय के 100 मीटर की परिधि में तथा 18 वर्ष से कम आयु के नाबालिग को या नाबालिग द्वारा तंबाकू उत्पाद बेचने को प्रतिबंधित करना है।

स्कूली छात्र समाज के हर वर्ग, हर तबके प्रतिनिधित्व करते है। उन्हें परिवार व समुदाय को स्वास्थ्य संबंधी जानकारी देने, जागरूक करने हेतु प्रेरित किया जा सकता है। छात्रों की रचनात्मकता बढ़ाने तथ स्वास्थ्य कार्यक्रमों में उनकी भूमिका निर्धारित करने हेतु रूचिकर गतिविधियाँ आवश्यक है। जिससे वे परिवार व समुदाय के हर व्यक्ति तक संदेश पहुँचाकर जागरूक कर सकेंगे।

उत्तर प्रदेश के स्कूली छात्रों को स्वास्थ्य कार्यक्रमों से जोड़ने तथा उनकी रचनात्मकता का उपयोग करने हेतु प्रत्येक स्कूल में स्वास्थ्य झरोखा (सूचना पटल) गतिविधि आयोजित की जायेगी। इसका उद्देश्य स्कूली छात्रों को स्वास्थ्य संबंधी सूचनायें, अध्ययन सामग्री को एकत्रित करना, पढ़ना तथा स्वास्थ्य झरोखे में इसका प्रदर्शन कर अन्य लोगों तक यह जानकारी पहुँचाना है। इस हेतु स्कूल में स्वास्थ्य झरोखा (सूचना पटल) उपलब्ध हो तथा तंबाकू नियत्रण प्रहरियों द्वारा छात्रों को प्रेरित कर स्वास्थ्य संबंधी जानकारियाँ, लेख, समाचार पत्र-पत्रिकाओं की कटिंग, स्थानीय प्रचलित उपचार, बुस्खे, चित्र आदि एकत्रित कराकर स्वास्थ्य झरोखा पर लगवाये। इसमें छात्रों द्वारा तंबाकू नियंत्रण पर तैयार किये गये लेख, चित्र, कार्टून व एकत्रित जानकारी को विशेष स्थान दिया जा सकता है।

शिक्षकों से अपेक्षा- प्रत्येक स्कूल में शिक्षकों के सहयोग से ही स्वास्थ्य अरोखा गतिविधि का सफलता पूर्वक क्रियान्वयन किया जा सकता है।

स्कूल स्तर पर तबाकू नियंत्रण एवं स्वास्थ्य संबंधी जानकारी देने तथा जागरूकता हेतु स्वास्थ्य झरोखा गतिविधि में स्कूल स्तर पर निम्न गतिविधियाँ आयोजित की किया जा सकता है-

स्कूल स्तर पर छात्रों को स्वास्थ्य जानकारी एकत्रित करने हेतु प्रेरित किया जावे। इसमें तंबाकू नियंत्रण पर समाचार पत्र- पत्रिकाओं में छपे लेख, स्वयं के तैयार किये लेख चित्र, कहानियाँ, सत्य घटना, स्थानीय उपचार बुस्खे, संदेश, नारे, पोस्टर तथा अन्य स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधी जानकारी हो सकती है। इन जानकारियों को तीन श्रेणीयों में बांटा जा सकता है- (1)स्वालिखित जानकारी (2) एकत्रित स्वास्थ्य संबंधी चित्रमय जानकारी (3) एकत्रित छपी हुई जानकारी।

शिक्षक एकत्रित जानकारी को स्वास्थ्य झरोखे में लगवाये तथा इसे 15 दिन या एक माह तक सुरक्षित लगी रहने दे। स्कूल के खाली समय में बच्चे जब इसे देखेंगे/पढ़ेंगे तो यह जानकारी उनके पालकों तक अवश्य जायेगी। स्वास्थ्य जानकारियाँ को एकत्र करने में बच्चों की रचनात्मकता एवं क्रियाशीलता का भरपूर उपयोग किया जा सकता है तथा इसे बढ़ाया भी जा सकता है।

स्वास्थ्य झरोखे के लिये पाक्षिक या मासिक विषय भी निर्धारित किये जा सकते है। अध्यापकों द्वारा बच्चों को विषय संबंधित जानकारी एकत्रित करने हेतु प्रेरित किया जाये। जानकारी एकत्रित करने वाले छात्र का नाम उस जानकारी के अवश्य दर्शाया जाये।

सप्ताह में एक दिन स्वास्थ्य झरोखे में दर्शाई गई जानकारी पर बच्चों की सामूहिक वाचन एवं सामूहिक चर्चा का आयोजन किया जावे। इसमें शिक्षक, पालक शिक्षक संघ के प्रतिनिधि, समाज सेवी, गैर सरकारी संगठनों के कार्यकर्त्ता स्थानीय स्वास्थ्य कार्यकर्ता, एएनएम तथा स्थानीय चिकित्सक को वक्ता के रूप में आमंत्रित किया जा सकता है।

स्कूल स्तर पर सांस्कृतिक गतिविधियों में स्वास्थ्य झरोखा आयोजित किया जाये। इससे तंबाकू नियंत्रण की गतिविधियों के सकारात्मक परिणाम प्राप्त हो सकेंगे। स्वतंत्रता दिवस, गाँधी जयंती, बाल दिवस व गणतंत्र दिवस पर विशेष स्वास्थ्य झरोखा आयोजित किया जा सकता है।

15 दिन या एक माह के पश्चात तंबाकू नियंत्रण प्रहरी इन जानकारियों को संग्रहित करें तथा एकत्रित नई जानकारी स्वास्थ्य झरोखे में प्रदर्शित कराई जा सकती है।

स्वास्थ्य झरोखे में स्वास्थ्य स्वच्छता के सभी विषयों का समावेश किया जावे। बच्चों को तंबाकू सेवन व धूम्रपान से बचाने के लिये इसमें तंबाकू नियंत्रण विषय पर विशेष महत्व दिया जा सकता है।

पालक शिक्षक संघ तथा ग्राम पंचायत के पदाधिकारी को स्वास्थ्य झरोखे में दर्शाई गई जानकारी के अवलोकन हेतु आमंत्रित करें। श्रेणी के आधार पर श्रेष्ठ जानकारी का चयन कर विजेता छात्र को प्रोत्साहित करें। चयनित जानकारी की श्रेणीवार विषयवस्तु के संबंध में तहसील स्तर पर शिक्षा अधिकारी को सूचित करें।

स्कूल स्तर पर सूचना, शिक्षा एवं संचार गतिविधियाँ जैसे चित्रकला, वाद विवाद, पोस्टर प्रतियोगिता, निबंध न नारे लेखन रैली, नुक्कड़ नाटक, दीवार लेखन आदि गतिविधियाँ आयोजित की जा सकती है।

सरकार द्वारा तहसील और जिला स्तर पर भी इस गतिविधि को महत्व देते हुये कार्यक्रम/योजना बनायी गई है।

गैर सरकारी संस्था डा.शीला शर्मा मै. चै. ट्रस्ट, मथुरा जनपद में विगत 20 वर्षो से तम्बाकू विरोधी अभियान को स्कूलों तथा जनता में चला रही है। अतः संस्था की सेवाओं को दृष्टिगत रखते हुये इस कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलाने हेतु सरकार और प्रशासन डा. शीला मै. चै. ट्रस्ट को इस कार्यक्रम हेतु अधि त किया जाये। जिससे कार्यक्रम की सफलता सुनिश्चित हो सके।

हरियाणा का रालेगण सिद्धि
जहाँ धूम्रपान निषिद्र है।

बुजुर्गों द्वारा तत्कालीन राजा को दिए गए वचन को बुल्लाखेड़ी गांव के लोग पिछले 400 वर्ष से निभा रहे हैं। यह गांव 'ब्यूटीफुल सिटी' चंडीगढ़ जैसे स्मोक फ्री शहरों के लिए भी मिसाल है।

करीब 400 वर्ष पूर्व गांव के लोगों ने तत्कालीन राजा उदय सिंह के गांव में धूम्रपान निषेध का वचन दिया था। ग्रामीण धूम्रपान को सामाजिक बुराई ही नहीं बल्कि, अपशकुन भी मानते हैं। ग्रामीणों में धारणा है कि अगर कोई राजा को दिए वचन का पालन नहीं करता तो उसके साथ कोई न कोई अनहोनी हो जाती है।

गांव बुल्लाखेड़ी जींद जिले के अंतिम छोर पर बसा है। राजा को दिए वचन को निभाने की परंपरा सेहत के लिए भी फायदेमंद साबित हो रही है। करीब 1800 की आबादी वाले इस गांव में जाट जाति के चहल गोत्र के लोग अधिक हैं। ब्राह्मणों और बल्मीकियों के परिवार भी हैं। गांव में कोई भी व्यक्ति हुक्का, सिगरेट, बीड़ी का सेवन नहीं करता।

पहले जब गांव में कोई मेहमान आता था तो बीड़ी, सिगरेट आदि मांगने पर उसे चिपटे से पकड़कर दिया जाता था। लेकिन अब मेहमानों को भी गांव से बाहर जाकर धूम्रपान करने के लिए कहा जाता है। गांव के बुजुर्गों ने बताया कि करीब 400 वर्ष पूर्व संगरूर रियासत के राजा उदय सिंह ने ग्रामीणों को जमीन इस शर्त पर दी थी कि वे धूम्रपान नहीं करेंगे।

गांव की सरपंच सरोज ने बताया कि गांव में

धूम्रपान निषेधाज्ञा गांव बसने के समय से ही लागू है। पूर्वजों द्वारा राजा उदय सिंह को दिए गए वचन का ग्रामीण आज भी पालन कर रहे हैं। ग्रामीण न केवल धूम्रपान को सामाजिक बुराई मानते हैं, बल्कि अकाल मौत की धारणा से भी डरते हैं। एक सवाल के जवाब में सरपंच ने कहा कि मेहमान को बाध्य नहीं किया जा सकता। कुछ ही मेहमान गांव में आकर धूम्रपान की इच्छा जाहिर करते हैं। अब तो उन्हें भी गांव से बाहर धूम्रपान करने को कहा जाता है। गांव में दुकानों पर भी बीड़ी-सिगरेट नहीं बिकते।

दैनिक जागरण, रविवार, 8 जनवरी 2012

विकिरणरोधी दवा में इस्तेमाल होगी तुलसी

हिन्दू घरों में तुलसी की पूजा सदियों से होती रही है। वैष्णव जन तो तुलसी पत्र बगैर भोग भी नहीं लगाते। उनकी इस पुरानी मान्यता का उपहास उड़ाने वाले वैज्ञानिकों को भी अब तुलसी के चमत्कारियों गुणों के आगे नतमस्तक होना पड़ा है।

सर्दी, जुकाम और अन्य बीमारियों में अचूक औषधि के रूप में तुलसी का इस्तेमाल पुरानी बात हो रही है। भारतीय वैज्ञानिकों ने अब जानलेवा विकिरण (रेडिएशन) की चपेट में आए लोगों के इलाज के लिए तुलसी का उपयोग किया है। इस हर्बल दवा के सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) द्वारा विकसित यह दवा परीक्षण के दूसरे चरण में है। डीआरडीओ के मुख्य नियंत्रक (शेध एवं विकास) डब्ल्यू सेल्वामूर्ति ने कहा कि इस दवा के अंतिम रूप देने और व्यावसायिक उत्पादन शुरू करने के पहले कुछ और परीक्षण की जरूरत है। पशुओं पर भी इसका परीक्षण किया गया है और उसके परिणाम बहुत उत्साहवर्धक रहे है। वह यहां भारतीय विज्ञान कांग्रेस के 99 वें सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। तुलसी के अलावा समुद्री बेर(सी- बकथोर्न) और भारतीय में ऐपल (पोडो- फाइलम हेक्सांड्रम) अन्य जड़ी बूटियां हैं जिन्हें इस औषधि के निर्माण के लिए चुना गया है। इनके जरिए न केवल परमाणु विकिरण से पीड़ित लोगों का इलाज किया जाएगा बल्कि वे लोग भी एहतियात के तौर पर इसका निर्माण कर सकेंगे जो विकिरण प्रभावित इलाकों में बचाव कार्य के लिए जाते हैं। सेल्वामूर्ति ने कहा कि दुनिया में पहली बार तुलसी का इस्तेमाल विकिरण की चपेट में आए लोगों के इलाज के लिए किया जा रहा है। इसी दवा का इस्तेमाल विकिरण की चपेट में आए पशुओं के इलाज के लिए भी किया जा सकता है।

इस पूरी परियोजना की लागत लगभग सात करोड़ रुपये है। अभी तक विकिरण से जुड़ी बीमारी के लिए जो दवाएं इस्तेमाल की जाती हैं वे प्रकृति से बहुत जहरीली होती हैं। जड़ी-बूटियों वाली यह दवा विकिरण ग्रस्त लोगों के इलाज का तरीका बदल देगी। यह बहुत सुरक्षित होगी। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक जड़ी बूटियों वाली कई दवाएं बना रहे हैं। उनमें से कुछ तो विशेष तौर पर भारतीय सेना के लिए बनाई जा रही है।

-साभार: दैनिक जागरण, रविवार, 8 जनवरी

गत माह के समाचार

ग्राम मदाल (मथुरा) में ग्रामीण महिलाओं को स्तन कैंसर के विषय में समझाते हुये संस्थान की महिला समाज सेवी।

ग्राम पेलखू में आयोजित शिविर में शंकर कैंसर संस्थान मथुरा की महिला डाक्टर महिलाओं को परीक्षण से पूर्व स्तन कैंसर व गर्भाशय ग्रीवा कैंसर के विषय में समझाते हुये।

राज. जूनियर हाईस्कूल नवादा में आयोजित प्राथमिक स्कूल शिक्षिकाओं के प्रशिक्षण कार्यक्रम में अध्यापिकाओं को गर्भाशय ग्रीवा कैंसर के विषय में समझाते हुये कार्यकर्त्ता

कुपोषण राष्ट्रीय शर्मः मनमोहन

भूख और कुपोषण पर हंगामा रिपोर्ट

● अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। देश के 42 फीसदी नौनिहालों के कुपोषण के शिकार होने से चिंतित प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने कहा है कि यह समस्या राष्ट्रीय शर्म की बात है। उन्होंने कहा कि छह वर्ष तक की आयु के करीब 16 करोड़ बच्चे जो देश का भविष्य हैं, उनमें कुपोषण का यह स्तर कतई स्वीकार्य नहीं है।

प्रधानमंत्री ने अर्थव्यवस्था की बढ़ती हुई रफ्तार के बीच नौनिहालों के कुपोषण की इतनी बड़ी तादाद के चलते कुपोषण के खिलाफ राष्ट्रीय अभियान चलाने का ऐलान किया। इसके तहत उन्होंने देश में कुपोषण से सबसे ज्यादा प्रभावित 200 पिछड़े जिलों में भोजन और स्वास्थ्य से जुड़ी विशेष योजनाएं शुरू करने की भी घोषणा की। सरकार इसके लिए जल्द ही मजबूत एकीकृत बाल विकास योजना की शुरुआत करेगी। पीएम ने सभी राजनीतिक दलों के युवा सांसदों की पहल पर नंदी फाउंडेशन के कुपोषण पर चलाई हंगामा रिपोर्ट को जारी करने के बाद यह बात कही। इस रिपोर्ट के निष्कर्षों की सराहना करते हुए मनमोहन ने कहा कि सरकार की प्राथमिकता कुपोषण की वजह समझना है। देश की इतनी बड़ी नौनिहालों की आबादी के कम लंबाई और वजन के होने पर चिंता जाहिर करते हुए पीएम ने कहा कि तमाम प्रयासों के बावजूद कुपोषण को पछाड़ने में हम तेजी से आगे नहीं बढ़ पाए हैं।

"जीडीपी में उल्लेखनीय वृद्धि के बावजूद कुपोषण की ऊंची दर अस्वीकार्य है और यह राष्ट्र के लिए शर्मनाक है। आज देश में छह वर्ष से कम आयु के करीब 16 करोड़ बच्चे हैं। कुपोषण की ऊंची दर के साथ कोई देश स्वस्थ भविष्य की उम्मीद नहीं कर सकता।

- मनमोहन सिंह, प्रधानमंत्री

चौंकाने वाले तथ्य

42% बच्चे (पांच वर्ष से कम उम्र के) कुपोषण के शिकार यानी सामान्य से कम वजन के हैं

59% फीसदी बच्चे औसत से कम लंबाई के

112 जिलों में 73000 परिवारों से बातचीत पर आधारित है रिपोर्ट

कैंसर रोगियों के सहायतार्थ दान की अपील

शंकर इंस्टीट्यूट ऑफ कैंसर थैरेपी एण्ड रिसर्च से कैंसर रोगियों की सहायतार्थ तथा कैंसर अस्पताल के उपकरणों, भवन निर्माण जैसे साधन जुटाने के लिये डॉ. शीला शर्मा मैमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट को दिया गया दान आयकर धारा 35 ए सी. के अन्तर्गत शतप्रतिशत आयकर से मुक्त है। अतः दान निम्न विवरण के साथ संस्था के बैंक खातों में सीधे जमा किया जा सकता है।

दानदाता का नाम .... राष्ट्रीयता ....

जन्मतिथि .... पता ....

....

बैंक का नाम .... चैक/ड्राफ्ट संख्या ....

चैक नम्बर .... दिनांक ....

डॉ. शीला शर्मा मैमोरियल चैरिटेबिल ट्रस्ट के खाता संख्या 2968101001590 केनरा बैंक, भारतीय स्टेट बैंक के खाता सं. 10432284467, बैंक ऑफ बड़ौदा के खाता सं. 07470100002403 पंजाब नेशनल बैंक खाता सं. 1638000100035867 में धन के जमा होते ही विधिवत प्राप्ति रसीद, आयकर छूट प्रमाण पत्र के साथ आपकी सेवा में तुरन्त प्रेषित कर दी जायेगी।

निवेदकः डॉ. एस.के. शर्मा, अध्यक्ष एवं ट्रस्टीगण

डॉ. शीला शर्मा मैमोरियल चैरिटेबिल ट्रस्ट 140, मील पत्थर, मसानी दिल्ली बाईपास लिंक रोड मथुरा– 281003

सम्पर्क– Call 09412238817, 09897298804, 0565-2425494

Publisher : Dr. S.K. Sharma
Place of Publication - 140 mile stone Masani-Delhi Bye Pass Link Road, Mathura
Printer - Vinod kumar chourasani
Place of Printing - Brij Printers, Badhpura, Sadar, Mathura
Owner- Dr. Sheela sharma Memorial Charitable Trust
Printed By - Brij Printers, Badhpura, Sadar, Mathura
Editor- Sunita Sharma
Published By - Dr. S.K. Sharma President on behalf of Dr. Sheela Memorial Charitable Trust

Courtesy - Volkart Foundation, Mumbai